an>

Title: Regarding pollution in river Chambal in Madhya Pradesh.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़) : अध्यक्ष महोदया, हमारे देश में पेड़ों, पहाड़ों, नदियों को देवों के रूप में पूजा जाता है। देश के कल-कारखानों से निकलने वाला घातक रसायन नदियों में पहुंचता है, तो न केवल नदियों के जल को प्रदूषित करता है, बल्कि नदियों में रहने वाले जल-जीवों के जीवन के लिए भी गंभीर खतरा बन जाता है।

महोदया, मैं मध्य प्रदेश की चम्बल नदी का उल्लेख करना चाहता हूं। चम्बल नदी देश की उन चंद नदियों में गिनी जाती है, जिनका पानी प्रदूषण रहित माना जाता है, लेकिन कल-कारखानों से निकलने वाला घातक रसायन बहाव के साथ चम्बल नदी में पहुंच रहा है, जिसकी वजह से चम्बल सैंक्चूरी के घड़ियाल और मगरमच्छ आदि जीवों के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा हो गया है। इस संबंध में विशेषज्ञों का कहना है कि प्रदूषित पानी की वजह से कवई मछली वहां पैदा होती है।...(व्यवधान) चम्बल नदी में इसका कोई अस्तित्व नहीं था, लेकिन यमुना नदी के माध्यम से औद्योगिक ईकाइयों से निकल कर जो दूषित पानी आ रहा है, इसकी वजह से कवई मछलियां बड़ी तादाद में वहां आ गई हैं और इस वजह से चम्बल नदी के जीव-जन्तुओं के अस्तित्व के लिए संकट पैदा हो गया है। केवल इतना ही नहीं है, बल्कि जहरीले पानी की वजह से जीव-जन्तु लीवर सोरियासिस का शिकार हो रहे हैं और कवई मछली लैट केडिमियम और आर्सेनिक जैसे खतरनाक रसायनों को लेकर चम्बल नदी में आती है।

मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करना चाहता हूं कि यमुना नदी पचनदे के पास जहां चम्बल में मिलती है, इसे चम्बल नदी में आने से रोकने के लिए पचनादा पर जाल लगाया जाना चाहिए तथा देश की सभी नदियां, जहां औद्योगिक ईकाइयों का प्रदूषित पानी दूसरी नदियों से मिलता है, उस जगह को प्रदूषण मुक्त किया जाना चाहिए, जिससे प्रदूषित पानी नदियों के बहाव में न मिलने पाए और विलुप्त हो रहे वन्य जीवों और जल जीवों की रक्षा की जा सके।

माननीय अध्यक्ष : डॉ. किरिट पी. सोलंकी, श्री शरद त्रिपाठी, श्री सी.पी. जोशी, श्री गजेन्द्र सिंह शेखावत, श्री हरीश मीणा, कुंवर पुष्पेन्द्र सिंह चंदेल, श्री ओम बिरला, श्री रेड़मल नागर, श्री भैरों प्रसाद मिश्र, श्री राजेन्द्र अग्रवाल को डॉ. वीरेन्द्र कुमार द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।